शेख़ फ़रीद – सबद ११७

सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥
सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥११५॥

सार: लाक्षणिक रूप से, धनुष धैर्य का प्रतीक है जो दृढ़ता में निहित शक्ति को दर्शाता है। धनुष की डोरी लचीलेपन का प्रतीक है जो अटूट संकल्प से उत्पन्न होने वाली शक्ति को रेखांकित करती है। वहीं, बाण पूर्णता का संकेत देता है जो सच्ची संतुष्टि से मिलने वाली स्पष्टता को चिह्नित करता है। यह तीनों मिलकर गहरा संदेश देते हैं, जब हम आंतरिक संतुलन प्राप्त कर लेते हैं तब जीवन में शांति और उद्देश्य की गहरी अनुभूति पाते हैं।

सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥
धैर्य को अपना आंतरिक धनुष बनाओ, यह संतोष की डोरी का काम करता है। इसका अर्थ है कि जिस पूर्णता की हम तलाश करते हैं, उसे पाने के लिए मन की स्थिरता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥११५॥
संतोष का यह बाण उस सर्वव्यापी परम-तत्व को पाने का लक्ष्य रखता है, यह जानते हुए कि वह परम-तत्व कभी कोई भूल नहीं करता। यह अस्तित्व की अंतर्निहित सामंजस्य को दर्शाता है जो कुछ हमें अव्यवस्थित प्रतीत होता है, वह भी वास्तव में व्यापक सटीकता और सूक्ष्मतर व्यवस्था के भीतर ही संचालित है। (११५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद सब्र के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहते हैं कि यह संतोष पाने का साधन है। इसके विपरीत, जल्दबाज़ी में किए गए कामों की वजह से अकसर हम अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं। इसका

मुख्य सार यह है कि सब्र अनमोल दौलत है, यह हमारे कामों का ब्रह्मांड के प्राकृतिक नियमों के साथ सामंजस्य बनाता है जिससे हमारी सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं और निराशा की गुंजाइश कम हो जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com